

अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

ज्ञानपुंज आचार्यश्री ने स्वाध्याय से ज्ञान प्राप्ति का दिया पावन पाथेय

-सूर्य पर छाए बादल, किन्तु धरती पर गतिमान हैं तेरापंथ के सूर्य

-लगभग तेरह कि.मी. का विहार कर अहिंसा यात्रा पहुंची मड्डीपडु

09.06.2018 मड्डीपडु, प्रकाशम् (आंध्रप्रदेश): जन-जन के मानस को पावन बनाने के लिए अहिंसा यात्रा लेकर निकले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें देदीप्यमान महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान आंध्रप्रदेश की धरती को पावन बना रहे हैं। इस प्रदेश के प्रमुख महानगरों सहित उपनगरों, कस्बों और गांवों को भी अपने चरणरज से पावन बनाने के साथ ही अपने मंगल प्रवचन के माध्यम से उनके मानस को भी पावन बनाने का प्रयास कर रहे हैं। आचार्यश्री की प्रसन्न मुखाकृति उस समय भाषाई बाधाओं को पार कर जाती है, जब स्थानीय श्रद्धालु आचार्यश्री के समक्ष श्रद्धा के साथ पहुंचते हैं तो वहां केवल भावनाएं काम कर जाती हैं। जिस श्रद्धा के साथ वे प्रणत होते हैं, वैसे ही वात्सल्य भाव से आचार्यश्री द्वारा जब उन्हें आशीष प्राप्त होता है तो वे आंतरिक आह्लाद का अनुभव करने लगते हैं।

आचार्यश्री अपनी अहिंसा यात्रा व धवल सेना का कुशल नेतृत्व करते हुए प्रकाशम् जिले के उस क्षेत्र में गतिमान हैं, जहां ग्रेनाइट पत्थरें प्राप्त होती हैं। जिन्हें बिक्री के लिए देश ही नहीं, विदेशों में भी निर्यात किया जाता है। इस क्षेत्र में अवस्थित पहाड़ों से ग्रेनाइट पत्थरें आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। इसलिए इस क्षेत्र में पत्थरों को काटकर और उन्हें उपयोग लायक बनाने के कारखाने भी लगे हुए हैं। जहां उन्हें एक निश्चित आकार देकर बिक्री के लिए तैयार किया जाता है।

गत तीन दिनों से मौसम में हुए बदलाव के कारण सूर्य अभी भी बादलों से आच्छादित है। शनिवार को प्रातः जब आचार्यश्री ने अगले गंतव्य की ओर प्रस्थान किया तो भी सूर्य अदृश्य ही था। आचार्यश्री लगभग तेरह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री मड्डीपडु स्थित के.वाई. गवरमेंट हाइस्कूल में पधारे।

विद्यालय परिसर में उपस्थित श्रद्धालुओं को ज्ञानपुंज आचार्यश्री ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को सदैव स्वाध्याय में रत रहने का प्रयास करना चाहिए। स्वाध्याय से ज्ञान मिलता है और ज्ञान प्रकाश करने वाला होता है। जहां ज्ञान का प्रकाश होता है, वहां से अज्ञानता रूपी अंधकार मिट जाता है। इसलिए ज्ञान प्राप्त करना है तो आदमी को निरंतर स्वाध्याय का प्रयास करना चाहिए।

ज्ञान प्राप्ति के तीन बाधाओं का वर्णन करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि आदमी को निद्रा को ज्यादा बहुमान नहीं देना चाहिए। निद्रा ज्ञान की प्राप्ति में एक बाधा है। इसलिए ज्यादा सोने से बचने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान प्राप्त करने वाले को ज्यादा-हंसी मजाक में भी समय नहीं गंवाना चाहिए। यह भी स्वाध्याय में एक बाधक तत्व है। आदमी को बाधों में ज्यादा रस नहीं लेना चाहिए। इस प्रकार आदमी इन बाधाओं से बचकर निरंतर स्वाध्याय करने का प्रयास करना चाहिए। स्वाध्याय द्वारा अर्जित ज्ञान को निर्मल बनाए रखने के लिए आदमी को प्राप्य ज्ञान को चितारने (दोहराते) रहने का भी प्रयास करना चाहिए ताकि प्राप्त ज्ञान मजबूत बना रहे। विस्मृति से बचने के लिए आदमी ज्ञान को फेरते (दोहराते) रहने का प्रयास करना चाहिए। स्वाध्याय के द्वारा ज्ञानात्मक निर्मलता को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।
